National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040; Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 2; Issue 2; May 2017; Page No. 172-173

जौनपुर की लोक–साहित्य चेतना में संकलित सोहर लोकगीतों का मार्मिक चित्रण

डॉ0 अन्जू पाण्डेय

असिस्टेण्ट प्रोफेसर, के0डी0एस0 महाविद्यालय पाली, जौनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

जौनपुर की लोक साहित्य चेतना के अन्तर्गत विविध प्रकार के गीतों जैसे– विवाह गीत, श्रम गीत, ऋतु गीत, जाति सम्बन्धी गीत, खेल गीत, लोरी, लोक कथाओं पर आधारित गीत एवं स्त्री गीतों आदि का संकलन एवं विवेचन बड़ी ही तन्मयता एवं सावधानीपूर्वक किया गया है। जौनपुर लोक के विभिन्न आयु वर्ग एवं विभिन्न व्यवसाय से सम्बन्धित लोकगीत अध्ययन का केन्द्र बने हैं। जौनपुर लोकगीतों का संकलन करने के उपरान्त यह बात गीतों की बहुलता है अर्थात् जौनपुर लोक में स्त्रियों द्वारा ही ज्यादातर लोकगीतों का गायन एवं अभिनवकरण देखने को मिलता है। पुरूष वर्ग भी संकलित लोक–गीतों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है, किन्तु स्त्रियों की भावात्मकता, पुरूषों की अपेक्षा ज्यादा सक्रिय दिखाई देती है। जौनपुर लोक में स्त्रियां भावनात्मक रूप से ज्यादा प्रेरित होती देखी गयी। अपने भावों जैसे हर्ष, मनोविनोद एवं कष्ट को लोकगीतों के माध्यम से प्रकट करने में स्त्रियों की प्रवीणता प्रमाणित होती है। श्रम कार्य को उल्लास कार्य में बदलने में भी लोकगीत सफल प्रतीत होते हैं। स्त्री लोकगीत में करूणा, ममता, दया, शोक एवं संताप का स्पष्ट चित्रण देखने को मिलता है। पुत्री के जन्म से लेकर विवाह, विदाई एवं ससुराल में रहन–सहन को स्त्रियों ने सरल एवं सहज ढंग से लोकगीतों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। संकलित लोक गीतों में सोहर लोकगीत का विशेष महत्व है। पुत्र शोक एवं पुत्री जन्म पर मिलने वाले ताने को एक स्त्री निम्न प्रकार प्रस्तुत करती है–

ए बढ़इया के होरिला गढ़ि देहु
त जियरा जुड़ाइवि हो।
काठे का बालक गढ़ि दिहले आंगने धरि दिहलई लो।
बाबुल मोरे आंगन रोइना सुनावहु मैं बाझिनी कहावतु हो।
रानी बढ़ई क गढ़ल होरिला रोवन न जानइ लो।
दैव गढ़ल जो मैं हो तो इतों रोई के सनउते ¬ लो।।

किस प्रकार लोहार से काठ का होरिला गढ़ने की बात कहकर लोकगीत के माध्यम से स्वयं की मातृत्व वेदना को प्रकट करती है। स्वयं द्वारा काष्ठ के होरिला की मांग करती है और अपने ऊपर बंध्या के कलंक को मिटाने के लिए तड़पती है। संकलित लोकगीत में बंध्या स्त्री के मर्म को सारगर्भित तरीके से प्रस्तुति मिलती है साथ ही सामाजिक जड़ता का भी दृश्य देखने को मिलता है।

ए कोरा लिहलों मैं भैया दूसरे कोरा भतीजा वा हो।
आहो रामा तबहु न गोदिया सोहावन अपना बालक बिनु हो।
आन मन करे भइया अगिनियां जरि हो जाऊं।

वही उपरोक्त संकलित गीत में बंध्या स्त्री स्वयं के पुत्र के लिए इस प्रकार संतप्त दिखाई देती है कि स्वयं आत्मघात के लिए भी तैयार हो जाती है। संकलित गीतों में स्त्री मनोदशा का मार्मिक चित्रण जौनपुर लोक–जीवन के व्यवहारिक एवं यथार्थ आचरण को हमारे सम्मुख प्रकट करने में सक्षम है।

वही दूसरी तरफ पुत्र जन्म के अवसर पर एक स्त्री अपने हर्ष एवं प्रसन्नता को निम्न संकलित लोकगीत के माध्यम से प्रकट करती है।

गोकुला में बाजत बधइया त नंद घर सोहर
नंद घर सोहर हो
बाबुल सोने के हंसवबा लेई आवई में राम नार
छीलउं बबुल नार छीनहुं हो,
अरे लेई आउ पीयर पीताम्बर।

पुत्र जन्म के अवसर पर स्वर्ण की हंसुली से बालक की नार को काटने का उद्घोष यह प्रकट करता है कि एक स्त्री पुत्र प्राप्ति पर सर्वस्व न्यौछावर करने के लिए तत्पर है। लोक चैतई के राम नवमी तो राम जनमलीन। बाजन बाजै दशरथ दुअरवा, कउसिल्या जी के आंगन हो।। अपने मन्दिल से ककहिया, सुमित्रा से बात करैं। बहिनी, कउसिल्या के जन्मे हैं राम चला देखि आई हो।। तेलवा लगवली, फुलेलवा, नतीसी रंग उभरन हो। बहिनी, घरवा से गइली, देवढ़िया के ठाढ़ि भई हो।।
उपरोक्त संकलित लोकगीत में पुत्र का जन्म एक स्त्री को इतना हर्षित करता है कि पुत्र के जन्म की तुलना राम के जन्म से करने लगती है। सोहर के माध्यम से अपने पुत्र में राम की छवि का स्मरण होने लगता है। संकलित गीत स्त्री मन के हर्षोल्लास के चरमोत्कर्ष की प्रस्तुति करने में समर्थ प्रतीत होता है।
पुत्र जन्म पर परिवार के समस्त सदस्य स्वयं के हर्ष को भांति–भांति प्रकार से लोकगीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं। ननद द्वारा भाभी से नेग मांगने के लिए भी लोकगीत का प्रयोग किया जाता है।

बाबा क दस हर चले त भइया के दीप जले।
अरे भउजी जे बेटवा जनती तौ मै नित उठि आइब।

किस प्रकार ननद अपने मायके के प्रति आशीष एवं शुभकामना से संरचित लोकगीत का प्रयोग करती है। जो एक स्त्री का पीहर से लगाव का अत्यन्त भावुक एवं मार्मिक चित्रण प्रस्तुत करती है। स्त्रियों का जीवन परिवार तक ही सीमित होता है। पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच स्त्रियां स्वयं के जीवन के प्रत्येक सुख एवं दुःख को लोकगीत की कड़ियों के रूप में एक प्रभावी तथा निर्भीक सृजनकर्ता का आदर्श प्रस्तुत करती हैं।

अन्य पड़ोसियों एवं रिश्तेदारों के द्वारा गायी जाने वाली संकलित सोहर निम्न हैः–

जेहि घर जन्मे ललनवा, त ओही घरे धनि–धनि हो।
रामा धनि–धनि कुल परिवार, त धनि–धनि लोग सब हो।
बंसवा के जरिया जन्मे बास, त रेड़वा के रेड़ जन्में हों।
रामा देवी कोखिया जन्में देवतवा, त देसवा के काम आवे हो।।
होनहार लिखा के पतवा, चीकन भल लागेला हो

राम पुतवा के अइसन लछनवा, निरखि मन विहंसेला हो।।
देहु–देहु सखिया असीस, ललन मुंहवां चुमहूं लो।।
रामा गोदिया में लेई लपटावहु, हियरा जुड़ावहु हों।
भारत माता होइहें सेवकवा, त मोर पूत हो।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्त्री गीतों में सोहर गीतों की अपनी विशेषता अद्वितीय है। सोहर गीतों में स्त्री की पुत्र आसक्ति एवं जौनपुर लोक में प्रचलित पुरूष सत्तात्मक समाज की छवि का दर्शन सोहर लोक गीतों के माध्यम से देखने को मिलता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. ऋग्वेद 10, 85
2. उपाध्याय जी का मत उदृत, भोजपुरी लोक साहित्य, 'डॉ0 शरतेन्दु'
3. दूबे डॉ0 शरतेन्दु, लोक साहित्य की रूपरेखा, पृ0 98
4. त्रिपाठी, रा0ज0, ग्राम साहित्य, पहला भाग, पृ0 27.
5. ''ब्राधो दैवस्तथैवार्षः'' प्रजापत्य स्थासुराः।
   गान्धर्वो राक्षसश्चैव पैशाचष्तमोअधम्।।